सरकार बनाएगी ? क्या सरकार सदन के प्रमुख सदस्यों को और समस्त राजनीतिक दलों के प्रमुख प्रतिनिधियों को बुलाकर इस विषय पर एक सहमति करेगी, क्योंकि इस राष्ट्रीय समस्या का समाधान किसी राजनीतिक पार्टी के लिए या सरकार के लिए अकेले करना संभव नहीं होगा । मैं यह मानता हूं कि इस राष्ट्रीय हित की समस्या के लिए सभी राजनीतिक दलों को मिलकर एक स्पष्ट नीति बनानी चाहिए और किसी भी बाहरी दबाव के सामने बिना घुटने टेके सख्ती के साथ, कड़ाई के साथ कदम उठाए जाने चाहिए ।

श्री मोहम्मद सलीम (पश्चिम बंगाल) : मैडम, विष्णु कान्त शास्त्री जी ने जो राष्ट्रीय समस्या का सवाल उठाया है तथा कहा है कि इस पर सभी की सहमति बननी चाहिए, यह ठीक है । लेकिन दिल्ली में सरकार की ओर से बंगला जुबान बोलने वाले जो पश्चिम बंगाल से आए हुए लोग हैं, वर्षों से यहां बसे हुए हैं, उनके ऊपर भी अत्याचार कर रही है । यह जो जहांगीरपुरी की बात कर रहे हैं, ऐसे बहुत से सवालात हमने होम मिनिस्ट्री के पास रखे हैं और यह कह रहे हैं कि बहुत सी पार्टियों ने, संस्थाओं ने इस पर आपत्ति की है । तो वह क्यों नहीं आपत्ति करेगी जब आप जुबान देखकर, आप भाषा देखकर, आप धर्म देखकर आप उनको विदेशी कह देंगे और इस तरह इस राष्ट्रीय समस्या का साम्प्रदायिकरण करेंगे तो बड़ा गलत होगा । जो पुलिस आयुक्त के बारे में यह बात कर रहे हैं, पुलिस के दफ्तर से भाजपा के कार्यकर्ताओं को कहा गया कि आप प्रेस करो राजनीतिक दृष्टिकोण से, साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से । तो इस तरह से यहां पर वर्षों से बसे हुए लोग हमारे पश्चिमी बंगाल से, जो गांव से आए हुए लोग हैं, उनके ऊपर अत्याचार किया जा रहा है । उन्हें मालूम होना चाहिए कि जब उनके एक नेता लोकसभा के सदस्य जब यह नेतृत्व करके बंगलादेशी घुसपैठियों के नाम पर . . .**(व्यवधान)** जब दिल्ली में फसाद कराने की कोशिश की थी, तो सिर्फ बंगाल से आए हुए लोग ही नहीं, दिल्ली के भी जो शांतिप्रिय लोग हैं . . . **(व्यवधान)** वह कि ऐसा सवाल यहां नहीं उठाएंगे । जो कालौनी में लोग बसे हुए हैं, जो छोटे-मोटे काम करते हैं, घरेलू काम करते हैं उनके ऊपर भी आज अत्याचार हो रहे हैं, सिर्फ राजनीतिक दबाव के कारण ।

श्रीमती सरला माहेश्वरी (पश्चिमी बंगाल): इस मामले में भारतीय जनता पार्टी को पुलिस की भूमिका अदा नहीं करनी चाहिए । . . .**(व्यवधान)** वह पुलिस और प्रशासन अपने हाथ में न ले, कानून और अधिकार अपने हाथ में न ले । यह काम सरकार का है, वही करेगी । . . . **(व्यवधान)** इस तरह राष्ट्रीय समस्या को साम्प्रदायिकता और प्रांतीयवाद का रूप यह भाजपा दे रही है, जिसे रोका जाना चाहिए । . . .**(व्यवधान)**

श्री विष्णु कान्त शास्त्री : मैं यह कहना चाहता हूं कि समस्या के राजनीतिक महत्व को देखते हुए एक सहमति बननी चाहिए । . . . **(व्यवधान)** उनको अगर कोई राजनीतिक पार्टी रोकती है तो मैं समझता हूं कि यह एक देशद्रोह जैसी बात है । . . . **(व्यवधान)** मैं यह बात स्वीकार करता हूं कि बंगला भाषा के कारण किसी पर कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए । . . . .**(व्यवधान)** धर्म के कारण किसी पर कोई अत्याचार न हो । . . . **(व्यवधान)**

श्रीमती सुषमा स्वराज (हरियाणा) : इस सदन में बंगलादेशी घुसपैठियों की बात कही है, उन्होंने पश्चिम बंगाल के लोगों की बात कही ही नहीं । . . . .**(व्यवधान)** शास्त्री जी ने जो मसला उठाया है उसमें अपनी ओर से कुछ नहीं कहा, लेफ्टिनेंट गवर्नर जो कहा उसको उन्होंने दोहराया . . . **(व्यवधान)**

उपसभापति : अगर किसी मसले पर कोई विवाद होता है जो उसका हल इसी तरीके से निकल सकता है कि सरकार उसकी जानकारी करे और पता लगाए कि सही कौन है, कौन घुसपैठिए हैं, क्योंकि बंगला बोलते हैं इसलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि वे बंगाल के रहने वाले हैं, यह जिम्मेदारी सरकार की है . . .**(व्यवधान)** आप मेरी बात को मत काटिए, गृह मंत्री जी यहां पर बैठे हैं; इस बात को नोट करें कि वह पश्चिम बंगाल के आने वाले लोग हैं या घुसपैठिए हैं । उसकी जानकारी और पुष्टि करना आपका काम है, यहां पर लड़ाई झगड़ा हो, उससे बेहतर है कि आप इसका पता लगाए । . . .**(व्यवधान)**

श्री प्रमोद महाजन, आप अपनी बात कहिए ।

RE. NEED FOR SEPARATE AEROPLANES FOR FOREIGN VISITS BY THE PRIME MINISTER AND OTHER VVIPS

श्री प्रमोद महाजन (महाराष्ट्र) : उपसभापति महोदया, जो यहां बैठकर बात करना चाहते हैं वह लॉबी का उपयोग करें ।

महोदया, यह मेरा सौभाग्य है कि जब मैं शून्य काल में इस प्रश्न को उठाने के लिए खड़ा हुआ हूं तो नागरिक उड्डयन मंत्री यहां पर उपस्थित हैं । मुझे पता नहीं है कि वह यहां आएंगे, लेकिन यह मेरा सौभाग्य है कि वह यहां पर उपस्थित हैं ।

महोदया, हम सब जानते हैं कि संसद के अधिवेशन के बाद प्रधान मंत्री चीन और दक्षिण कोरिया की यात्रा पर जा रहे हैं । किसी भी देश के प्रधान मंत्री को भिन्न-भिन्न देशों की यात्रा करने की आवश्यकता होती है । उनके साथ पत्रकार होते हैं, और कुछ आवश्यक लोग होते हैं, अधिकारी होते हैं, तो स्वाभाविक रूप से मैं यह अपेक्षा नहीं करता कि प्रधान मंत्री किसी व्यावसायिक हवाई जहाज से इंतजार करके जाते हों ।

एक माननीय सदस्य : नेहरू जी जाया करते थे . . .**(व्यवधान)**

श्री प्रमोद महाजन : मैं अपेक्षा नहीं करता हूं कि प्रधान मंत्री किसी विशेष हवाई यान से न जाएं । वह जाएं, यह बात

समझ में आती है । लेकिन प्रश्न यह उठता है कि प्रधान मंत्री या और किसी अति विशिष्ट व्यक्ति के दौरे के लिए हमारी जो विदेशी यात्रा सेवा है एयर इंडिया, उसकी उड़ानें 20—25 दिन के लिए हमें कैंसिल करनी पड़ें । यह स्थिति क्यों आती है ? मैं नहीं समझता कि किसी और देश में इस प्रकार की व्यवस्था होगी जिसमें कि देश का कोई विशिष्ट व्यक्ति किसी देश के दौरे पर जा रहा हो, इसलिए ब्रिटिश प्राइम मिनिस्टर यहां आ रहा हो तो ब्रिटिश एयरवेज़ की उड़ानें कैंसिल हों क्योंकि वह हघर आना चाहते हैं या बिल क्लिंटन की हवाई यात्रा के लिए वहां की एयरलाईंस बंद हों । लेकिन जब भी हमारे यहां से अति विशिष्ट व्यक्ति बाहर जाते हैं तो कोई न कोई हवाई यात्रा स्थगित करनी पड़ती है । मैंने जैसा कहा कि मुझे आपत्ति नहीं है कि वह विशेष हवाई जहाज से जाएं, लेकिन उसके लिए एयर इंडिया का हवाई जहाज पकड़ा गया है, ऐसे वह चलता नहीं है, उसमें परिवर्तन करना पड़ता है, इसलिए उस को 8 दिन ग्राउंड करके रखेंगे, फिर 8 दिन बाहर जाएगा और फिर उसे मूल रूप में आने के लिए 8 दिन यानी कुल तीन हफ्ते उसे कैंसिल किया जाएगा । जो लंदन जाने वाला था वह नहीं गया तो पैसेंजर्स जो लंदन में हैं वह लोग पूछेंगे जो एयर इंडिया की फ्लाइट से जाना चाहते हैं, उनको कहा जाएगा कि हमारे प्रधान मंत्री जी चीन गए हैं ? मैं इस समस्या की दृष्टि से नागरिक उड्डयन मंत्री जी से नहीं कह रहा हूं, मुझको यह लगता है कि आप प्रधान मंत्री को, राष्ट्रपति को, उपराष्ट्रपति को और जो अति विशिष्ट व्यक्ति हैं, इनके लिए अलग से वायुयान रखें । उसमें जितनी भी सुविधा, अति विशिष्ट व्यक्तियों के लिए होती है, उनके अनुसार वह बनाया जाए, उसमें सैक्यूरिटी कांशियसनेस और ज्यादा हो । यह हवाई जहाज अगर होगा तो बार-बार एयर इंडिया से या और किसी से हवाई जहाज नहीं लेना पड़ेगा । उसमें एयर इंडिया की प्रतिमा भी धूमिल होती है और प्रधान मंत्री की भी प्रतिमा धुमिल होती है । और देश पर भी प्रश्नचिह्न लगता है । लगता है कि इनके पास हवाई जहाज इतने कम हैं कि प्रधान मंत्री को देंगे तो पैसेंजर को नहीं देंगे और पैसेंजर को देंगे तो प्रधान मंत्री दौरा नहीं कर सकते । मुझे लगता है देश जब इतने हजारों-हजार करोड़ का खर्चा करता है तो मेरा नागरिक उड्डयन मंत्री जी से यह कहना है कि प्रधान मंत्री या राष्ट्रपति की किसी वर्षगांठ पर एक एयर इंडिया का हवाई जहाज प्रेजेन्ट कर दें और वह हवाई जहाज लेकर प्रधान मंत्री दौरा करें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं । लेकिन जिस प्रकार से इसकी प्रतिमा बन रही है वह गलत है । अगर नागरिक उड्डयन मंत्री कुछ कर सकते हैं तो करें । यह मेरी प्रार्थना है ।

उपसभापति : आप तो कमेटी के चेयरमैन हैं । आप कमेटी की तरफ से मशिवरा दे दीजिए ।

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश) : यह सारे सदन की तरफ से मशिवरा आ रहा है ।

नागर विमानन और पर्यटन मंत्री (श्री गुलाम नबी आजाद) : मैं प्रमोद जी से बिल्कुल बराबर सहमत हूं । एक मिनट अगर रोस्टर में लेट भी पहुंचा तो इसका एक कारण टैलीपैथी है, मैं इसी बारे में मीटिंग ले रहा था कि जब भी प्रधान मंत्री जायें या राष्ट्रपति जायें या उपराष्ट्रपति जायें तो क्या करें ? इन्होंने मिसाल दी क्लिंटन की । उनके पास दो हजार जहाज हैं । अगर हमारे पास एक चौथाई भी होते तो शायद यह जरूरत न पड़ती बल्कि सौवां हिस्सा भी नहीं है । लेकिन कल भी और आज भी इसी बारे में मीटिंग ले रहा था । टूरिस्ट की वजह से भी हमें दिक्कत हो जाती है । जहाज डिसलोकेट करने पड़ते हैं । लेकिन जाने वाले कुछ महीनों में हम सोचते हैं इस बारे में पामानेन्ट इलाज निकालें ताकि पैसेंजर को नुकसान न हो और फ्लाइट से रेवेन्यू भी लास न हो ।

उपसभापति : श्री अहमद मोहम्मद भाई पटेल । इनकी मैडन स्पीच है ।

SPECIAL MENTIONS

Sardar Sarovar Projects

श्री अहमद मोहम्मद भाई पटेल (गुजरात) : उपसभापति महोदया, मैं आपका आभारी हूं कि गुजरात का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अहम मसला सरदार सरोवर योजना के बारे में विशेष उल्लेख करने का आपने मुझे मौका दिया । जैसा सब जानते हैं कि सरदार सरोवर योजना न सिर्फ गुजरात के लिए बल्कि समूचे राष्ट्र के लिए एक महत्वपूर्ण योजना है । इस योजना का जल्दी से जल्दी परिपूर्ण होना न सिर्फ गुजरात की जनता के लिए बल्कि समूचे-समूचे राष्ट्र के हित में होगा, यह कहूंगा तो बिल्कुल गलत नहीं होगा । मैं जब राष्ट्र हित की बात कर रहा हूं तो इस योजना के बारे में मैं कुछ बात भी करना चाहूंगा । जैसा कि हम जानते हैं हमारा अन्न उत्पादन, अनाज उत्पादन इस साल 180 मिलियन टन रहा । यह बहुत प्रशंसनीय बात है । लेकिन जिस रफ्तार से हमारी आबादी की बढ़ोतरी हो रही है मैं समझता हूं कि आने वाले दिनों में हमें ज्यादा अनाज की ज़रूरत पड़ेगी । जो कृषि के लिए आज जमीन उपलब्ध है हमारे पास वह 141 मिलियन हैक्टेयर है उसमें अभी तक कोई बढ़ोतरी नहीं हुई, बल्कि जैसा कहा गया कम हुई है । दूसरी बात मैं यह भी ज़िक्र करना चाहूंगा कि जैसा सब जानते हैं हमारे देश में एक तिहाई एरिया ऐसा है जहां पर हमें हमेशा अकाल का सामना करना पड़ता है और साथ ही साथ 12 प्रतिशत एरिया ऐसा है जो हमेशा बाढ़ग्रस्त रहता है । ऐसी हालत में 1997 में हमें तकरीबन 210 मिलियन टन अनाज की जरूरत पड़ेगी और 2007 तक हमें तकरीबन 285 मिलियन टन अनाज की जरूरत पड़ेगी । जब यह योजना परिपूर्ण होगी तो इससे 18 लाख हैक्टयर जमीन की सिंचाई की सुविधा होगी । गुजरात में राजस्थान और दूसरे प्रदेश अलग हैं । अगर हम यह मानकर चलें कि सिर्फ 70 प्रतिशत कृषि जमीन की सिंचाई होगी जो मैं समझता हूं इससे हमारे देश में 36 लाख टन अनाज का ज्यादा उत्पादन होगा और यह अनाज मेरे ख्याल से एक करोड़ 80 लाख लोगों का पेट भरेगा । इतने लोगों को फायदा होगा । इसलिए मैं कहता हूं यह जो योजना है यह राष्ट्र के हित में है और जल्दी से जल्दी यह परिपूर्ण हो जाए यह बहुत ही आवश्यक है ।